



## महाभारत के वनपर्व में भौतिक दुःख स्वरूप निरूपण

देव प्रकाश गुजेला

एम.ए.(संस्कृत)

मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार

### सारांश :

मनुष्य का जन्म और मरण के चक्र में बंधना ही दुःख का कारण है। इस दुःख के होने और उसके कारणों की मीमांसा करना भारतीय ज्ञान परम्परा का वैशिष्ट्य है। वैदिक काल से लेकर अद्यावधि दुःख के कारणों एवं उसके निवृत्ति के उपायों तक पहुंचने के मार्ग का वैज्ञानिक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य के कल्याण के लिए तथा जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने का वर्णन वेदों में बहुतायत रूप से प्राप्त होता है। जन्म-मरण रूप इस परम दुःख का विवेचन वेदों से अनन्तर भी उपनिषद् आदि वैदिक वाङ्मय में विशिष्ट ज्ञान के रूप में उपलब्ध है। जीवात्मा और परमात्मा में जीवात्मा ही अपने कर्मजन्य सुख, दुःख रूप फलों को भोगने वाला होता है। मुण्डकोपनिषद् में इसका वर्णन करते हुए लिखा गया है-



द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया, समानं वृक्षं परिषस्वजाते।  
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्य नश्चन्नन्यो अभिचाकशीति॥

वैदिक वाङ्मय के अतिरिक्त परवर्ती काल में भी विभिन्न भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों में भी मनुष्य के मनुष्यों के जन्म-मरण रूप दुःखों के कारणों एवं उसके निवृत्ति के उपायों पर विशद रूप से विवेचन किया गया है। सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल ने तीन प्रकार के दुःखों का वर्णन करते हुए उनके आत्यन्तिक एवं आत्यन्तिक निवृत्ति के उपायों का वैज्ञानिक ढंग से वर्णन किया है। महर्षि कपिल के सांख्यसूत्र पर अपने प्रकरण ग्रन्थ सांख्यकारिका में ईश्वरकृष्ण ने लिखा है-

दुखत्रयाभिघाताजिज्ञासा तदपघातके हेतौ।  
दृष्टे साऽपार्था चेन्नैकान्तोऽत्यन्ताभावात्॥

इसके पश्चात् अन्य अनेक भी अन्य वैदिक दर्शन के सम्प्रदायों में भी दुःख निवृत्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति ही उनका परम प्रयोजन माना गया है। नास्तिक दर्शन में महात्मा गौतम बुद्ध ने भी चार आर्य सत्य में दुःख के

<sup>1</sup>मुण्डकोपनिषद्, ३/१/१

<sup>2</sup>सांख्यकारिका, १

कारणों एवं दुःख की निवृत्ति के उपायों का यथार्थता का विशद रूप में वर्णन किया है। इसके पश्चात् महाकाव्यों में भी दुःख के कारणों एवं उसकी निवृत्ति के उपायों का वर्णन किया गया है।

### कुञ्जी पटल :

जीव, आत्मा, जन्म, मरण, दुःख, निवृत्ति, उपाय, मोक्षा

### महाभारत में दुःख स्वरूप :

महाभारत के वन पर्व में कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से दुःख के कारणों एवं निवृत्ति के उपायों का विशद रूप में वर्णन प्रस्तुत किया है। महाभारत में उपलब्ध दुःख स्वरूपों का वर्णन संक्षिप्त रूप से निम्न रूप से द्रष्टव्य है-

महर्षि कृष्णद्वैपायन वेदव्यासद्वारा प्रणीत महाभारत में दुःख के कारणों एवं उसके निवृत्ति के उपायों का विशद रूप में वर्णन किया गया है। महाभारत के वन पर्व में दुःख के कारणों का सांकेतिक वर्णन करते हुए वैशम्पायन ने युधिष्ठिर से कहा है कि -

अर्थकृद्गेषु दुर्गेषु व्यापत्सु स्वजनस्य च।  
शारीरिकमानसैर्दुःखैर्न सीदन्ति भवद्विधाः॥

अर्थात् अर्थसंकट, दुस्तर दुःख तथा स्वजनों पर आयी हुई विपत्तियों में आप जैसे ज्ञानी पुरुष शारीरिक और मानसिक दुःखों से पीडित नहीं होते।

उपर्युक्त श्लोक में शारीरिक एवं मानसिक इन दो प्रकार के दुःखों के कारणों का वर्णन किया गया है। इसका अभिप्राय यह है कि विभिन्न परिस्थितियों के कारण मन चञ्चल हो जाता है जिसके कारण अन्तःकरण अस्थिर हो जाता है जिससे विविध प्रकार की व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिनका अन्तःकरण स्थिर रहता है वे कभी भी जगत् के शारीरिक एवं मानसिक दुःखों से पीडित नहीं होते हैं। इन दुःखों की निवृत्ति का उपाय आचार शुद्धि के रूप में वर्णित किया गया है। महाभारत के वनपर्व में मानसिक एवं शारीरिक दुःखों के कारणों एवं उसकी निवृत्ति के उपायों का विशद वर्णन किया गया है।

### महाभारत के वनपर्व में शारीरिक दुःख के कारण एवं उपाय :

शारीरिक दुःखों के कारणों का वर्णन करते हुए महाभारत के वनपर्व में कहा गया है-

व्याधेरनिष्टसंस्पर्शाच्छ्रमादिष्टविवर्जनात्।  
दुःखं चतुर्भिः शारीरं कारणैः सम्प्रवर्तते॥

अर्थात् रोग, अप्रिय घटनाओं की प्राप्ति, अधिक परिश्रम तथा प्रिय वस्तुओं का वियोग - इन चतुर्विध कारणों से शारीरिक दुःख प्राप्त होता है। इसका मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि से वर्णन करते हुए कहा गया है-

<sup>3</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/१९

<sup>4</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२२

मानसेन हि दुःखेन शरीरमुपतप्यते।  
अयः पिण्डेन तप्तेन कुम्भसंस्थामिवोदकम्॥

अर्थात् मन में दुःख होने पर भी उसी प्रकार से सन्तप्त लगता है जिस प्रकार तपाया हुआ लोहे का गोला डाल देने पर घड़े में रखा हुआ शीतल जल भी गरम हो जाता है।

उक्त वर्णन में शारीरिक दुःख की प्राप्ति के चार कारणों का उल्लेख किया गया है। महाभारत के ही वनपर्व में इस शारीरिक दुःख की निवृत्ति का उपाय बताते हुए कहा गया है-

तदा तत्प्रतिकाराच्च सततं चाविचिन्तनात्।  
आधिव्याधिप्रशमनं क्रियायोगद्वयेन तु॥

अर्थात् समय पर इन चारों कारणों का प्रतिकार करना एवं कभी भी उसका चिन्तन न करना ये दो क्रियायोग( दुःख निवारक उपाय) है। इसी से आधि-व्याधि की शान्ति होती है। मानसिक दुःख भी शारीरिक ध्याधियों की उत्पत्ति के कारण हैं इसलिए महाभारत में युधिष्ठिर से कथन करते हुए वैशम्पायन कहते हैं-

मानसं शमयेत् तस्माञ्ज्ञानेनाग्निमिवाम्बुना।  
प्रशान्ते मानसे ह्यस्य शरीरमुपशाम्यति॥

महाभारत के वनपर्व में मानसिक दुःख का निरूपण :

भौतिक विषयों व पदार्थों में आसक्ति ही मानसिक दुःखों का कारण है। वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर यह शाश्वत सत्य भी है। मानसिक दुःखों के मूल कारणों का वर्णन करते हुए महाभारत के वनपर्व में वैशम्पायन ने युधिष्ठिर से करते हुए कहा है-

स्नेहमूलानि दुःखानि स्नेहजानि भयानि च।  
शोकहर्षौ तथाऽऽयासः सर्वं स्नेहात् प्रवर्तते॥  
स्नेहाद् भावोऽनुरागश्च प्रजज्ञे विषये तथा।  
अश्रेयस्करावुभावेतौ पूर्वस्तत्र गुरुः स्मृतः॥

कहने का अभिप्राय यह है कि आसक्ति ही दुःख का मूल कारण है। आसक्ति से भय उत्पन्न होता है। शोक, हर्ष तथा क्लेशइन सबकी प्राप्ति भी आसक्ति के ही कारण होता है। आसक्ति से ही विषयों में भाव व अनुराग उत्पन्न होते हैं। ये दोनों ही व्यक्ति के कल्याण या मानसिक स्थिरता के बाधक होते हैं। इनमें भी पहला अर्थात् विषयों के प्रति भाव महान् अनर्थकारक माना गया है।

विषयों में आसक्ति हो जाने पर मनुष्य के अन्तःकरण की अस्थिरता में नैरन्तर्य वृद्धि होती रहती है जिससे व्यक्ति के धर्म और अर्थ दोनों का नाश हो जाता है। इस सन्दर्भ में महाभारत में कहा गया है-

मनसो दुःखमूलं तू स्नेह इत्युपलभ्यते।

<sup>5</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२५

<sup>6</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व/२, २३

<sup>7</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२६

<sup>8</sup>महाभारत, वनपर्व/ अरण्यपर्व, २/२८-२९

### स्नेहात् तू सज्जते जन्तुर्दुःखयोगमुपैति च॥

अर्थात् मन के दुःख का मूल कारण का पता लगाने पर स्नेह अर्थात् सांसारिक विषयों में आसक्ति की ही प्राप्ति दिखाई देती है। इसी स्नेह के कारण ही जीव विषयों में आसक्त होता है और दुःख पाता है।

कोटराग्निर्यथाशेषं समूलं पादपं दहेत्।  
धर्मार्थौ तु तथाल्पोऽपि रागदोषो विनाशयेत्॥<sup>9</sup>

अभिप्राय यह है कि खोखले में लगी हुई आग सम्पूर्ण वृक्ष को जड़-मूल सहित जलाकर भस्म कर देती है उसी प्रकार विषयों के प्रति भी थोड़ी सी भी आसक्ति धर्म और अर्थ को नष्ट कर देती है। इसके अतिरिक्त भी वैशम्पायन द्वारा युधिष्ठिर से इस सम्बन्ध में वर्णन करते हुए कहा है-

विप्रयोगे न तु त्यागी दोषदर्शी समागमे।  
विरागं भजते जन्तुर्निर्वैरो निरवग्रहः॥<sup>1</sup>

अर्थात् विषयों के प्राप्त न होने पर जो उनका त्याग करता है वह त्यागी नहीं है अपितु जो विषयों के प्राप्त होने पर भी उनमें दोष देखकर उनका परित्याग करता है, वस्तुतः वही त्यागी है। वही वैराग्य को भी प्राप्त होता है तथा समस्त दुःखों से मुक्त भी हो जाता है। उसके मन में किसी के प्रति द्वेष-भाव न होने के कारण वह निर्वैर तथा बन्धन मुक्त होता है।

### मानसिक दुःखों की निवृत्ति के उपाय :

बुद्धिमान् एवं विद्वान् मनुष्य मानसिक दुःखों का निवारण प्रिय वाणी तथा मानव के कल्याणकारी भोगों की प्राप्ति का चिन्तन कर समस्त मानसिक दुःखों का निवारण किया करते हैं। मनुष्य के मानसिक दुःखों के निवारण की यथार्थ स्थिति भी यही है। महाभारत के वनपर्व में इसका सूक्ष्म रूप से वर्णन करते हुए कहा गया है-

मतिमन्तो ह्यतो वैद्याः शमं प्रागेव कुर्वते।  
मानसस्य प्रियाख्यानैः सम्भोगोपनयैर्नृणाम्॥<sup>2</sup>

ज्ञान को ही मानसिक दुःखों की निवृत्ति का मूलभूत उपाय बताया गया है। इसका वर्णन करते हुए महाभारत में कहा गया है-

मानसं शमयेत् तस्माज्ज्ञानेनाग्निमिवाम्बुना।  
प्रशान्ते मानसे ह्यस्य शरीरमुपशाम्यति॥<sup>3</sup>

<sup>9</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२७

<sup>10</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/३०

<sup>11</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/३१

<sup>12</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२४

<sup>13</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/२६

कहने का अभिप्राय यह है कि मानसिक दुःखों की निवृत्ति हो जाने पर मनुष्य शारीरिक दुःखों से भी मुक्त हो जाता है। मानसिक दुःखों की निवृत्ति हो जाने पर मनुष्य शारीरिक व्याधियों से भी मुक्त हो जाता है। इसका विशद रूप में वर्णन करते हुए महाभारत<sup>14</sup> में विस्तारपूर्वक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

### निष्कर्ष :

उक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य भौतिक और आध्यात्मिक दुःखों के कारण ही पौनःपुन्येन जन्म-मरण के चक्रव्यूह में बंधता रहता है। आध्यात्मिक दुःखों की निवृत्ति का उपाय आत्मा का अपने वैशेषिक गुणों से पृथक् कर लेने से हो जाता है किन्तु भौतिक दुःखों की निवृत्ति सांसारिक विषयों से मन का निग्रह कर लेने से हो जाती है क्योंकि विषयों में आसक्ति मनुष्य के मानसिक दुःख का कारण है और ये मानसिक व्याधियाँ ही मनुष्य के विविध शारीरिक दुःखों का भी कारण है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. महाभारत(द्वितीय खण्ड), सम्पा. पं. रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय, गीताप्रेस गोरखपुर, सं. २०७५
2. महाभारत, द्वारका प्रसाद शर्मा, रामनारायणलाल पब्लिशर्स, इलाहाबाद
3. महाभारतसंहिता, भाण्डारक प्राच्यविद्या संशोधन मन्दिरम्, पूना : १९७४
4. महाभारत में भारतीय संस्कृति, नेहा पुस्तक केन्द्र, दिल्ली : २०१६
5. महाभारत में एक दिव्य, ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त, वैदिक रिसर्च सेन्टर : २०१९
6. महाभारत दर्शन-समग्र दृष्टि, अनन्त शर्मा, राजस्थान संस्कृत अकादमी, २०१६
7. महाभारत में शिष्टाचार, देवी दयाल अग्रवाल, कावेरी बुक : २०१७

<sup>14</sup>महाभारत, वनपर्व/अरण्यपर्व, २/३१-४९